

# परमात्मा शिव का अवतरण संगम पर

कहते हैं कि भारत में हर आये दिन एक-न-एक त्योहार तो होता ही है। परन्तु यदि गिनती करने बैठें तो यहाँ तीन सौ पैंसठ दिनों में शायद तीन सौ छियासठ ही त्योहार निकलेंगे। तथापि इन त्योहारों में से शिवरात्रि, होली, रक्षाबन्धन, जन्माष्टमी, नवरात्रि, दशहरा और दीपावली ही मुख्य त्योहार हैं। इनके अतिरिक्त संगम अथवा कुम्भ का मेला, बसन्त का मेला और पुरुषोत्तम मास आदि भी मनाये जाते हैं।

आज इन त्योहारों को जिस अर्थ में और जिस रीति से मनाया जाता है, उससे तो ऐसा प्रतीत होता है कि ये साम्प्रदायिक त्योहार हैं अर्थात् कोई त्योहार शैव लोगों का, कोई वैष्णवों का तो कोई शाक्त सम्प्रदाय वालों का है। ऐसा लगता है कि ये त्योहार भिन्न-भिन्न देवताओं या देवियों अथवा भिन्न-भिन्न ऐतिहासिक वृत्तान्तों की याद में मनाये जाते हैं। परन्तु वास्तविकता यह है कि सभी त्योहार शिवरात्रि से निकलते हैं और ये सभी किसी-न-किसी तरह परमात्मा शिव के अवतरण काल अर्थात् संगमयुग (कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संधिकाल) से सम्बन्धित हैं। अतः जैसे परमात्मा सभी आत्माओं से महान हैं, वैसे ही शिवरात्रि भी सभी त्योहारों तथा उत्सवों की माता-पिता है और यदि इसके रहस्य को जानकर इसे यथार्थ रीति से मनाया जाये तो सारे संसार का कल्याण हो सकता है। शायद हमारी इन पंक्तियों को पढ़कर कोई सोचे कि यों ही शिवरात्रि के त्योहार को बढ़ावा दिया जा रहा है। परन्तु वास्तव में यों ही बढ़ावा नहीं दिया जा रहा है। बल्कि यह बात सही है। समझने-योग्य है और बहुत ही महत्वपूर्ण, रूचिकर तथा कल्याणकारी है। अतः हम संक्षेप में इस विषय को स्पष्ट करेंगे कि शिवरात्रि सभी त्योहारों की माता-पिता कैसे है और सभी त्योहारों का सम्बन्ध शिव के अवतरण काल (संगमयुग) से कैसे है।

**शिव कौन हैं और शिवरात्रि किसका स्मरणोत्सव है ?**

शिव और शिवरात्रि के साथ अन्य त्योहारों का सम्बन्ध स्पष्ट करने के लिए पहले तो यह जानना जरूरी है कि शिव कौन हैं और शिवरात्रि का क्या महत्त्व है। इस विषय में पहले तो यह ज्ञान होना चाहिए कि यहाँ 'शिव' शब्द शंकर का पर्यायवाचक नहीं है बल्कि शंकर तो ब्रह्मा और विष्णु की तरह एक देवता हैं परन्तु शिव शुद्ध ज्योतिस्वरूप हैं और अकाय (शरीर-रहित) हैं, जिनकी प्रतिमा भारत में शिवलिंग (लिंग = चिह्न) के रूप में स्थान-स्थान पर मिलती है। शिव तीनों देवताओं के भी रचयिता हैं और इन द्वारा सृष्टि की स्थापना, पालना तथा विनाश करने वाले 'त्रयम्बकेश्वर' अथवा 'त्रिमूर्ति' हैं, और इन्हें ही 'विनाश' तथा 'महाकालेश्वर' आदि नामों से भी याद किया जाता है। शिव किसी एक धर्म या सम्प्रदाय के पूज्य देव नहीं हैं। बल्कि ये सभी अमर आत्माओं के परमपिता - 'अमरनाथ' हैं। मक्का में इन्हीं का स्मरण

चिह्न 'संगे-असवद' नाम से मिलता है। कुछ काल पहले यहूदी लोग कोई शपथ लेते समय इसी आकार का एक पत्थर हाथ में लेते थे, शायद वे इसे जिहोवा अर्थात् परमात्मा का स्मरण-चिह्न मानते रहे होंगे और उसे सामने मानकर शपथ लेते होंगे। खोज करने वालों का कहना है कि कुछ समय पूर्व तक लगभग सभी धर्मों के लोगों के यहाँ शिव का स्मरण-चिह्न था जिससे यह प्रतीत होता है कि वे परमात्मा को, इसी तरह का, एक चेतन ज्योति-रूप मानते थे और उसे 'शिव' से मिलते-जुलते नाम 'शिवाजिया' - (फ्रीजिया अथवा फीजी में) 'शिऊन' (बेबीलोन में), सिबु अथवा शिवु (अमेरिका और पेरुविया में) आदि-आदि नामों से परमात्मा को मानते थे। रोम में शिवलिंग को 'प्रियपस' कहते हैं। और इटली में गिरजाघर में अभी तक शिवलिंग की प्रतिमा हैं। भारत में तो अमरनाथ से लेकर रामेश्वर तक शिवलिंग की प्रतिमा है। भारत में तो अमरनाथ से लेकर रामेश्वर तक शिव की यादगारें हैं ही जो कि यह सत्यता प्रमाणित करती हैं कि शिव श्रीराम के भी पूज्य (रामेश्वर) हैं और श्रीकृष्ण के भी ईश्वर (गोपेश्वर) हैं। स्वयं अद्वैत मत के प्रवर्तक शंकराचार्य ने भी शिवलिंग के मठ स्थापित किये और आज भी चारों पीठों के शंकराचार्य शिवलिंग अर्थात् परमात्मा शिव के चिह्न की

**ज्ञान-सागर शिव के ज्ञान का मनन ही सागर-मंथन है, उससे प्राप्त ज्ञानामृत को बुद्धि रूपी कलश में धारण करने से ही सफलता मिलती है**

पूजा करते हैं। अतः यह बात सुनिश्चित कर लेने पर कि शिव तीनों देवों के भी रचयिता, सर्व आत्माओं के परमपिता, सबके परम मान्य परमात्मा ही हैं जिन्हें कि कल्याणकारी होने के कारण गुणवाचक 'शिव' नाम से याद किया जाता है, हम अब शिवरात्रि के विषय में कुछ रहस्योद्घाटन करेंगे।

'रात्रि' शब्द का अर्थ अज्ञानान्धकार होता है, जब सभी आत्मा-विस्मृति रूपी निद्रा में सोये होते हैं, सभी की बुद्धि तमोगुण से आच्छादित होती है और विकार रूपी लुटेरे मनुष्य के सुख को लूट कर उसे नष्ट-भ्रष्ट कर रहे होते हैं, तब ऐसी रात्रि में परमपिता परमात्मा शिव जगत के कल्याण के लिए अवतरित होते हैं। ऐसा समय कलियुग का अन्त ही होता है। कलियुग के अन्त में अवतरित होकर परमपिता परमात्मा शिव ज्ञान रूपी अमृत और योग रूपी प्रकाश द्वारा मनुष्य मात्र को सतोप्रधान एवं स्वरूप-स्थित बनाते हैं, और इस प्रकार सतयुग की शुरुआत होती है। पुराणों में भी लिखा है कि नई-सृष्टि की स्थापना के लिए ज्योतिर्लिंगम शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा को रचा और उसके सम्मुख प्रणत हुए और उसी वृत्तान्त की याद में शिवरात्रि का त्योहार मनाया जाता है। अतः याद रहे कि परमात्मा शिव का अवतरण-काल कलियुग के अन्त और सतयुग के आरम्भ का संगम काल है। इन रहस्यों का ज्ञान होने के बाद भारत के अन्य सभी त्योहारों का भी शिवरात्रि से सम्बन्ध स्पष्ट हो जायेगा। अतः अब हम मुख्य मेलों और त्योहारों का वर्णन करते हैं।

**शिव मिलन का कुम्भ का मेला**

ऊपर हम बता आये हैं कि परमपिता परमात्मा 'शिव' कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संगम समय अवतरित होते हैं। तब ही मनुष्यात्माओं का परमप्रिय परमात्मा से मिलन अथवा मेला होता है। उसी की याद में आज लोग संगम का मेला मनाते हैं परन्तु वास्तव में वे उसका असली स्वरूप नहीं जानते। वे कहते हैं कि जब सागर-मंथन हुआ था तो उसमें से अमृत का कुम्भ निकला था और उसे इन्द्र का बेटा लेकर भागा था तो रास्ते में जहाँ-जहाँ अमृत छलक कर थोड़ा गिरा था, वहाँ-वहाँ कुम्भ का मेला मनाया जाता है। अब सोचने की बात है कि 'अमृत' जल की तरह कोई स्थूल पेय पदार्थ थोड़े ही है! अमृत तो ज्ञान ही है क्योंकि ज्ञान द्वारा मनुष्यात्मा मृत्यु अथवा काल से छूट कर अमर देवता पद को प्राप्त होती है। अतः वास्तविकता तो यह है कि ज्ञान-सागर परमात्मा शिव ने कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संगम में जो ज्ञान दिया था, वही वास्तव में अमृत था। 'सागर को गागर में बन्द करना' - यह एक मुहावरा है। परमात्मा तो ज्ञान के सागर हैं, उनके ज्ञान का सार ही मनुष्य की बुद्धि रूपी गागर में अथवा कुम्भ में अथवा कलश में धारण हो सकता है। अतः संगम युग पर शिव के ज्ञान-सागर का जिन आत्माओं ने मनन (मंथन) किया, उन्होंने अपने बुद्धि रूपी कुम्भ में अमृत प्राप्त किया और परमात्मा के साथ संगम (मेला) मनाया। उस द्वारा वे सतोप्रधान हुए और उनकी धर्म, अर्थ, मुक्ति आदि की शुभ कामनाएं भी पूर्ण हुई क्योंकि उन्होंने काम-क्रोधादि असुरों पर विजय प्राप्त की। अतः आज भी किसी शुभ कार्य का उद्घाटन करते समय, उसकी सफलता के लिए लोग कलश भर कर रख देते हैं। वास्तव में तो परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा तथा सच्चे ब्राह्मणों द्वारा ज्ञान-कलश की स्थापना करके सतयुगी सुखमयी सृष्टि की स्थापना की थी जिसमें कि मनुष्य 'पूर्ण-काम' था अर्थात् उसे सब-कुछ प्राप्त था। परन्तु आज लोग जल का मटका भर कर रख देते हैं और समझते हैं कि सब कार्य सिद्ध हो जायेगा। यह भला कैसे हो सकता है? कार्य की सफलता तो ज्ञान द्वारा पवित्र एवं श्रेष्ठचारी बनने से होगी और ज्ञान तो बुद्धि रूपी कलश में भरना होगा, न कि मिट्टी के घड़े में। अतः आज यदि लोगों को 'संगम' का, 'अमृत' का, 'कलश' का अथवा 'कुम्भ' का, तथा 'सागर-मंथन' का सही भावार्थ मालूम होता तो वे कर्म-काण्ड की बजाए ज्ञानामृत बुद्धि में धारण करते अथवा आत्मा को ज्ञान-स्नान कराते न कि स्थूल नदियों में स्नान करने से आत्मा के पाप नहीं धुलते, न ही पुण्य लाभ होता है। आत्मा तो ज्ञान द्वारा ही पावन होती है, तभी तो कहा गया है कि "ज्ञान बिना गति नहीं है!" शिव का अवतरण-काल ही संगम है, ज्ञान-सागर शिव के ज्ञान का मनन ही सागर-मंथन है, उससे प्राप्त ज्ञानामृत को बुद्धि रूपी कलश में धारण करने से ही सफलता मिलती है और संगम युग में मिले ज्ञान में स्नान करने से ही आत्मा पावन होती है।



**वरदानी भवन।** गायत्री परिवार के प्रमुख श्री मिश्रीलाल जी को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.कुसुम बहन।



**पोखर।** श्री राम कथा वाचक श्रीश्री 1008 बालकदास जी महाराज को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुरेखा बहन



**रतलाम।** अम्बामाता मंदिर में आयोजित सात दिवसीय राजयोग शिविर का उद्घाटन करते हुए समाज सेवी बद्रीलाल मकवाना, राजु पंवार, पंडित नारायण पांडे जी, ब्र.कु.सविता एवं ब्र.कु.गिता



**इन्दौर।** ज्ञानशिखर में लायस क्लब के पदाधिकारियों के लिए सकारात्मक सोच की कला विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए रमेश कावरा, राम एरन, श्रीमती एरन, ब्र.कु.उषा दीदी, ब्र.कु.ओमप्रकाश भाई जी एवं अन्य



**झालावाड़।** रोडवेज कर्मचारियों को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु.जमीला बहन तथा साथ में है मीना बहन, मैनेजर सत्यवीर चौधरी एवं अन्य।



**इन्दौर।** पिताश्री ब्रह्माबाबा के अव्यक्त दिवस पर शांति स्तंभ की प्रतिष्ठाति पर श्रद्धासुमनअर्पित करने पश्चात परमात्म स्मृति में ब्र.कु.अनिता, ब्र.कु.हेमलता बहन, ब्र.कु.नारायण शाह, ब्र.कु.अमिन भाई एवं अन्य।